विषय-सूची

प्रथम-अध्याय

प्रास्ताविक

प्रथम परिच्छेद १—२२

भारतीय वाङ्मय और अनुमान १

अनुमानका विकास-क्रम ८

(क) न्याय-परम्परामें अनुमान-विकास ८

(ख) वैशेषिक-परम्परामें अनुमानका विकास १७

(ग) बौद्ध-परम्परामें अनुमानका विकास १९

(घ) मीमांसक-परम्परामें अनुमानका विकास २२

(ङ) वेदान्त और सांख्य-परम्परामें अनुमान-विकास २२

द्वितीय परिच्छेद २३-३२

जैन परम्परामें अनुमान-विकास २२

(क) षट्खण्डागममें हेतुवादका उल्लेख २३

(ख) स्थानाङ्गसूत्रमें हेतु-निरूपण २३

(ग) भगवतीसूत्रमें अनुमानका निर्देश २५

(घ) अनुयोगसूत्रमें अनुमान-निरूपण २५

१—अनुमान भेद २५

१. पुव्ववं २५

२. सेसवं २५

३. दिट्ठसाहम्मवं २५

१—पुव्ववं २५

२—सेसवं २५

(१) कार्यानुमान २६

(२) कारणानुमान २६

(३) गुणानुमान २६

(४) अवयवानुमान २६

(५) आश्रयी-अनुमान २७

३—दिट्ठसाहम्मवं

(१) सामन्नदिट्ठ २७

(२) विसेसदिट्ठ २७

२—कालभेदसे अनुमानका त्रैविध्य २७
१. अतीतकालग्रहण २७
२. प्रत्युत्पन्नकालग्रहण २८
३. अनागतकालग्रहण २८
(ङ) अवयव-चर्चा २९
(च) अनुमानका मूल रूप ३०
(छ) अनुमानका तार्किक-विकास ३१

तृतीय परिच्छेद ३३-५२

संक्षिप्त अनुमान-विवेचन ३३
अनुमानका स्वरूप ३३
अनुमानके अंग ३४
(क) पक्षधर्मता ३५
(ख) व्याप्ति ३७
अनुमानभेद ४१
अनुमानावयव ४४
अनुमानदोष ४८

चतुर्थ परिच्छेद ५३-५७

भारतीय अनुमान और पाश्चात्य तर्कशास्त्र ५३
अन्वयविधि ५३
संयुक्त अन्वय-व्यतिरेकविधि ५४
व्यतिरेकविधि ५४
सहचारी वैविध्यविधि ५५
अवशेषविधि ५६

द्वितीय अध्याय

प्रथम परिच्छेद ५८-७५

जैन प्रमाणवाद और उसमें अनुमानका स्थान ५८
(क) तत्त्व ५८
(ख) प्रमाणका प्रयोजन ५९
(ग) अन्य तार्किकों द्वारा अभिहित प्रमाणका स्वरूप ६०
(घ) जैन चिन्तकों द्वारा प्रमाणका स्वरूप-विमर्श ६२

समन्तभद्र और सिद्धसेन ६२
पूज्यपाद ६३
अकलङ्क ६५
विद्यानन्द ६६
माणिक्यनन्दि ६७
देवसूरि ६७
हेमचन्द्र ६७
धर्मभूषण ६८
निष्कर्ष ६८
(घ) प्रमाण-भेद ६९
(ङ) जैनन्यायमें प्रमाण-भेद ७०
(च) परोक्ष-प्रमाणका दिग्दर्शन ७४
द्वितीय परिच्छेद ७६–१०७
अनुमान-समीक्षा ७६
(क) अनुमानका मूल रूप : जैनागमके आलोकमें ७६
(ख) अनुमानका महत्त्व एवं आवश्यकता ८५
(ग) अनुमानकी परिभाषा ९०
(घ) अनुमानका क्षेत्रविस्तार : अर्थापत्ति और अभावका अन्तर्भाव ९८
अर्थापत्ति और अभाव अनुमानसे पृथक् नहीं हैं १०१
सम्भवका अनुमानमें अन्तर्भाव १०४
प्रातिभका अनुमानमें समावेश १०५

तृतीय अध्याय

प्रथम परिच्छेद १०८–१२९
अनुमानभेद-विमर्श १०८
वैशेषिक १०८
मीमांसा १*९
न्याय १०९
सांख्य १११
बौद्ध ११२
जैन तार्किकों द्वारा अनुमानभेद-समीक्षा ११२
(क) अकलङ्कोक्त अनुमानभेद-समीक्षा ११३
(ख) विद्यानन्दकृत अनुमानभेद-मीमांसा ११५

(ग) वादिराज द्वारा अभिहित अनुमानभेद-समीक्षण ११७
(घ) प्रभाचन्द्र प्रतिपादित अनुमानभेद-आलोचना ११८
अनुमानभेद-समीक्षाका उपसंहार ११९
स्वार्थ और परार्थ ११९
वादिराजकृत मुख्य और गौण अनुमानभेद ११–१२ १२१
प्रत्यक्ष परार्थ है : सिद्धसेन और देवसूरिका मत : उसकी मीमांसा १२४
स्वार्थानुमानके अङ्ग १२६
धर्मोकी प्रसिद्धता १२६
परार्थानुमानके अङ्ग और अवयव १२९
द्वितीय परिच्छेद **१३०–१५८**
व्याप्ति-विमर्श १३०
(क) व्याप्तिस्वरूप १३०
(ख) उपाधि १३२
(ग) उपाधिनिरूपणका प्रयोजन १३३
(घ) जैन दृष्टिकोण १३५
(ङ) व्याप्ति-ग्रहण १३७
(१) बौद्ध व्याप्ति-ग्रहण १३८
(२) वेदान्त व्याप्ति-स्थापना १३९
(३) सांख्य व्याप्ति-ग्रहण १४०
(४) मीमांसा व्याप्ति-ग्रह १४०
(५) वैशेषिक व्याप्ति-ग्रह १४१
(६) न्याय व्याप्ति-ग्रह १४२
(च) जैन विचारकोंका मत : तर्क द्वारा व्याप्तिग्रहण १४६
निष्कर्ष १५३
(छ) व्याप्ति-भेद १५५
समव्याप्ति-विषमव्याप्ति १५५
अन्वयव्याप्ति-व्यतिरेकव्याप्ति १५५
साधर्म्यव्याप्ति-वैधर्म्यव्याप्ति १५६
तथोपपत्ति-अन्यथानुपपत्ति १५६
बहिर्व्याप्ति, सकलव्याप्ति, अन्तर्व्याप्ति १५७

चतुर्थ-अध्याय

प्रथम परिच्छेद **१५९–१८८**
अवयव-विमर्श १५९

अवयवोंका विकासक्रम १५९
प्रतिपाद्योंकी दृष्टिसे अवयवप्रयोग १६३
तुलनात्मक अवयव-विचार १६६
(१) प्रतिज्ञा १६९
(२) हेतु १७३
(३) दृष्टान्त १७६
(४) उपनय १८१
(५)निगमन १८३
(६-१०) पंच शुद्धियाँ १८६
द्वितीय परिच्छेद १८९–२२५
हेतु-विमर्श १८९
१—हेतुस्वरूप १८९
द्विलक्षण १९०
त्रिलक्षण १९०
चतुर्लक्षण १९२
पंचलक्षण १९२
षड्लक्षण १९३
सप्तलक्षण १९४
जैन तार्किकों द्वारा स्वीकृत हेतुका एकलक्षण : अन्य—
लक्षणसमीक्षा— १९४
२—हेतु-भेद २०४
हेतुभेदोंका सर्वेक्षण २०४
जैन परम्परामें हेतुभेद २०६
स्थानांगसूत्रनिर्दिष्ट हेतुभेद २०७
अकलङ्कप्रतिपादित हेतुभेद २०८
विद्यानन्दोक्त हेतुभेद २११
(१) विधिसाधक विधिसाधन (भूत-भूत) हेतु २१२
(१) कार्य २१२
(२) कारण २१२
(३) अकार्यकारण २१२
१. व्याप्य २१२
२. सहचर २१२
३. पूर्वचर २१२
४. उत्तरचर २१२

(२) प्रतिषेधसाधक विधिसाधन (अभूत-भूत) २१२
(क) साक्षात्हेतु २१२
(१) विरुद्धकार्य २१३
(२) विरुद्धकारण २१३
(३) विरुद्धाकार्यकारण २१३
१. विरुद्धव्याप्य २१३
२. विरुद्धसहचर २१३
३. विरुद्धपूर्वचर २१३
४. विरुद्धउत्तरचर २१३
(ख) परम्परहेतु २१३
(१) कारणविरुद्धकार्य २१४
(२) व्यापकविरुद्धकार्य २१४
(३) कारणव्यापकविरुद्धकार्य २१४
(४) व्यापककारणविरुद्धकार्य २१४
(५) कारणविरुद्धकारण २१४
(६) व्यापकविरुद्धकारण २१४
(७) कारणव्यापकविरुद्धकारण २१४
(८) व्यापककारणविरुद्धकारण २१४
(९) कारणविरुद्धव्याप्य २१४
(१०) व्यापकविरुद्धव्याप्य २१५
(११) कारणव्यापकविरुद्धव्याप्य २१५
(१२) व्यापककारणविरुद्धव्याप्य २१५
(१३) कारणविरुद्धसहचर २१५
(१४) व्यापकविरुद्धसहचर २१५
(१५) कारणव्यापकविरुद्धसहचर २१५
(१६) व्यापककारणविरुद्धसहचर २१५
(३) विधिसाधक प्रतिषेधसाधन (भूत-अभूत) २१६
१. विरुद्धकार्यानुपलब्धि २१६
२. विरुद्धकारणानुपलब्धि २१६
३. विरुद्धस्वभावानुपलब्धि २१६
४. विरुद्धसहचरानुपलब्धि २१६
(४) विधिप्रतिषेधक प्रतिषेधसाधन (अभूत-अभूत) २१७
(१) अविरुद्धकार्यानुपलब्धि २१७

(२) अविरुद्धकारणानुपलब्धि २१७
(३) अविरुद्धव्यापकानुपलब्धि २१७
(४) अविरुद्धसहचरानुपलब्धि २१७
(५) अविरुद्धपूर्वचरानुपलब्धि २१७
(६) अविरुद्धउत्तरचरानुपलब्धि २१७

पंचम अध्याय

प्रथम परिच्छेद २२६-२४६
जैन परम्परामें अनुमानाभास-विमर्श २२६
समन्तभद्रद्वारा निर्दिष्ट अनुमानदोष २२६
सिद्धसेननिरूपित अनुमानाभास २२७
अकलङ्कीय अनुमानदोषनिरूपण २२८
१. साध्याभास २२९
२. साधनाभास २३०
(१) असिद्ध २३३
(२) विरुद्ध २३३
(३) सन्दिग्ध २३४
(४) अकिञ्चित्कर २३४
३. दृष्टान्ताभास २३५
(१) साधर्म्यदृष्टान्ताभास २३५
(१) साध्यविकल २३५
(२) साधनविकल २३५
(३) उभयविकल २३५
(४) सन्दिग्धसाध्यान्वय २३५
(५) सन्दिग्धसाधनान्वय २३५
(६) सन्दिग्धोभयान्वय २३६
(७) अनन्वय २३६
(८) अप्रदर्शितान्वय २३६
(९) विपरीतान्वय २३६
(२) वैधर्म्यदृष्टान्ताभास २३६
(१) साध्याव्यावृत्त २३६
(२) साधनाव्यावृत्त २३६

(३) उभयाव्यावृत्त २३६
(४) संदिग्धसाध्यव्यतिरेक २३६
(५) संदिग्धसाधनव्यतिरेक २३६
(६) संदिग्धोभयव्यतिरेक २३७
(७) अव्यतिरेक २३७
(८) अप्रदर्शितव्यतिरेक २३७
(९) विपरीतव्यतिरेक २३७
माणिक्यनन्दिद्वारा अनुमानाभास-प्रतिपादन २३७
(१) त्रिविध पक्षाभास २३८
१. बाधित २३८
२. अनिष्ट २३८
३. सिद्धबाधित २३८
(१) प्रत्यक्षबाधित २३८
(२) अनुमानबाधित २३८
(३) आगमबाधित २३९
(४) लोकबाधित २३९
(५) स्ववचनबाधित २३९
(२) चतुर्विध हेत्वाभास २४०
(३) द्विविध दृष्टान्ताभास २४०
(१) अन्वयदृष्टान्ताभास २४०
(२) व्यतिरेकदृष्टान्ताभास २४०
(४) चतुर्विध बालप्रयोगाभास २४०
(१) द्वि-अवयवप्रयोगाभास २४१
(२) त्रि-अवयवप्रयोगाभास २४१
(३) चतुरवयवप्रयोगाभास २४१
(४) विपरीतावयवप्रयोगाभास २४१
देवसूरि-प्रतिपादित अनुमानाभास २४२
हेमचन्द्रोक्त अनुमानाभास २४४
अन्य जैन तार्किकोंका मन्तव्य २४४
(१) धर्मभूषण २४४
(२) चारुकीर्त्ति २४५
(३) यशोविजय २४६

द्वितीय परिच्छेद २४७–२५४

इतरपरम्पराओंमें अनुमानाभास-विमर्श २४७

वैशेषिकपरम्परा २४७

न्यायपरम्परा २४८

बौद्धपरम्परा २५०

उपसंहार २५५-२६३

अनुमानका परोक्ष प्रमाणमें अन्तर्भाव २५७

अर्थापत्ति अनुमानसे पृथक् नहीं २५७

अनुमानका विशिष्ट स्वरूप २५८

हेतुका एकलक्षण (अन्यथानुपपन्नत्व) स्वरूप २५९

अनुमानका अंग एकमात्र व्याप्ति २५९

पूर्वचर, उत्तरचर और सहचर हेतुओंकी परिकल्पना २५९

प्रतिपाद्योंकी अपेक्षा अनुमानप्रयोग २६०

व्याप्तिका ग्राहक एकमात्र तर्क २५०

तथोपपत्ति और अन्यथानुपपत्ति २६१

साध्याभास २६१

अकिञ्चित्कर हेत्वाभास २६१

बालप्रयोगाभास २६२

अनुमानमें अभिनिबोध-मतिज्ञानरूपता और श्रुतरूपता २६२

●